पुस्तक समीक्षा

पर्यावरण एंव समाज, संपादक डा0 अजय सिंह, डा0 सुरेन्द्र सिंह, विवेक प्रकाशन,जवाहर नगर, दिल्ली, 2014, ISBN 81-7004-312-6 मूल्य रू0550,पृष्ठ–253

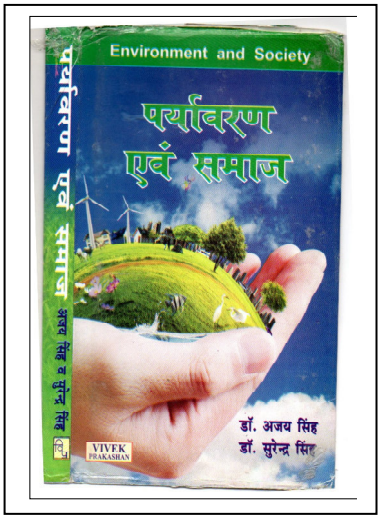

पर्यावरण एंव समाज के बीच अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। पर्यावरण मानव के शरीर एंव समाज को आकार देता है। तो समाज भी पर्यावरण एंव पर्यावरणीय व्यवस्था को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। पर्यावरण मानवीय समाज एंव मानवीय जीवन के करीब–करीब हर एक क्षेत्र को प्रभावित करता है। मानव समाज सदैव एक निश्चित प्राकृतिक पर्यावरण में रहता रहा है तथा प्राकृतिक पर्यावरण मानव समाज की प्रकृति को विषेश रूप से प्रभावित करता रहा है। लेकिन आज मानव ने अपनी प्रगति के लिए पर्यावरणीय उपादानों का अनियमित उपयोग किया है जिससे पर्यावरणीय अवनयन हो रहा है और पर्यावरण के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिन्ह लग गया है। फलस्वरूप अनियन्त्रित समाज व पर्यावरण तथा मानव दोनों पर पड़ रहा है।

लेखक द्वय के द्वारा संपादित प्रस्तुत पुस्तक में पर्यावरण एंव समाज कें सम्बन्धों का विश्लेषण किया गया है जिसमें इक्कीसवी सदी के पर्यावरण की दशा– दिशा एंव भावी योजना पर प्रकाश डाला गया है। सात खण्डों में विभक्त इस पुस्तक में कुल तीस मूल्यवान लेखों को शामिल किया गया हे। जिसमें प्रथम खण्ड पर्यावरण तथा समाज परिचयात्मक विवेचन के तहत पर्यावरण तथा समाज से जुड़े विश्लेषणों पर आधारित चार लेखों को शामिल किया गया है।इस खण्ड में पर्यावरण व समाज से जुड़ें पहलुओं पर बड़ी ही सुन्दरता से उकेरा गया है। द्वितीय खण्ड पर्यावरण तथा विकास प्रकिया अन्तर्सम्बन्ध का है जिसमें छः लेखों को संग्रह है। ये सभी लेख मनुष्य के विकास के परिणामस्वरूप पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव पर आधारित है। तृतीय खण्ड पर्यावरण प्रदूषण के विविध आयाम है इसमें पर्यावरण प्रदूषण पर आधारित बहुमुल्य छः लेख शामिल किये गये हैं। इन लेखों में पर्यावरण प्रदूषण के विभिन्न स्वरूपों का उल्लेख तो है ही साथ ही उन समस्याओं को दूर करने के उपाय भी सुझाये गये है।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखकों ने पुस्तक के चतुर्थ खण्ड में पर्यावरण शिक्षा व जागरूकता नामक शीर्षक के तहत छः लेख शामिल किये है। इस खण्ड के सभी लेख समाज में पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता एंव महत्व पर आधारित है। इस खण्ड का निष्कर्ष है कि पर्यावरण शिक्षा के अभाव में पर्यावरण को संरक्षण नही प्रदान किया जा सकता है। पर्यावरण और संस्कृति सें जुड़े पहलुओं कर चर्चा पुस्तक के पंचम खण्ड पर्यावरण तथा संस्कृति के तहत किया गया है। इसमें पर्यावरण के सन्दर्भ में भारतीय संस्कृति की प्रासंगिकता बतलाई गई है।षष्टम खण्ड में पर्यावरण संरक्षण के विविध आयाम के तहत पर्यावरण संरक्षण के तीन लेख शामिल किये गए हे। इस खण्ड में पर्यावरण संरक्षण के विभिन्न पहलूओं पर प्रकाश डाला गया है। सप्तम खण्ड मं 21 वी सदी पर्यावरण चिन्तन के विविध सन्दर्भ शीर्षक के तहत तीन लेख है। इसमें अन्तिम लेख अंग्रेजी भाषा मे हैं। इस खण्ड में पर्यावरण के विभिन्न पहलूओं पर प्रकाश डालते आलेख हैं। जो वर्तमान व्यावहारिक समस्याओं और पर्यावरण चेतना पर आधारित है।

जब हम पर्यावरण की बात कर रहे है तो समाज को इसके साथ जोड़कर चलना होगा क्योंकि पर्यावरण और समाज एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़े है। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक द्वय इस सम्बन्धों के विश्लेषण का प्रयास कर रहे हैं। साथ ही प्रस्तुत पुस्तक में पर्यावरण के विभिन्न समस्याओं को समाज के सन्दर्भ में समझने , विश्लेषित करने और उसके निराकरण का प्रयास किया गया है। अनेक अमूल्य सुझावों को दर्शाते हुए इस पुस्तक के लेखक पर्यावरण व समाज के सम्बन्धों को पाठक को समझाने में सफल प्रतीत होते है। प्रस्तुत पुस्तक कुछ पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान करती नजर आती है। जो समान्य जन के लिए अत्यन्त उपयोगी हो सकती हैं । आशा है कि पर्यावरण के प्रति जागरूक चिन्तकों व विद्वानों को यह पुस्तक अवश्य पसंद आयेगी।

डॉ0 शैलेन्द्र कुमार यादव,
सहायक प्रोफेसर, भूगोल विभाग,
हण्डिया, पी0 जी0 कालेज, हण्डिया,
इलाहाबाद, (उ0 प्र0) भारत